



## नादयोग का तनाव प्रबंधन एवं भावनात्मक संतुलन में योगदान

दिनेश कुमार, शोधार्थी, योग विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान (भारत)  
डॉ. शिखा बंसल, सहायक प्रोफेसर, योग विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान (भारत)

### शोधसार

आधुनिक जीवनशैली में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएँ अत्यधिक बढ़ गई हैं। लगातार बढ़ते कार्यभार, सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों, तकनीकी उपकरणों का अत्यधिक प्रयोग, तथा जीवन में अस्थिरता और अनिश्चितताएँ तनाव, चिंता और भावनात्मक असंतुलन के प्रमुख कारण बन गई हैं। तनाव केवल मानसिक स्थिति को प्रभावित नहीं करता, बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है, जैसे उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, नींद में कमी, मांसपेशियों में तनाव और प्रतिरक्षा प्रणाली में कमजोरी।

नादयोग, योग के अंतर्गत एक प्राचीन साधना पद्धति है, जिसमें ध्वनि (नाद) का प्रयोग किया जाता है। इसमें स्वर, मंत्र, भ्रामरी नाद, अनाहत नाद और उद्गीत आदि अभ्यास शामिल हैं। नादयोग के अभ्यास से मस्तिष्क की अल्फा और थीटा तरंगें सक्रिय होती हैं, जो मानसिक शांति, ध्यान की गहराई और भावनात्मक स्थिरता को बढ़ाती हैं। शोध से पता चलता है कि नादयोग तनाव घटाने, सकारात्मक भावनाओं को बढ़ाने और नकारात्मक भावनाओं को कम करने में अत्यंत प्रभावी है।

इस अध्ययन का उद्देश्य यह था कि नादयोग के नियमित अभ्यास का तनाव स्तर, अवसाद, चिंता और भावनात्मक संतुलन पर प्रभाव निर्धारित किया जा सके। इसके लिए चयनित प्रतिभागियों को दो समूहों में विभाजित किया गया – प्रयोगात्मक समूह (जो नादयोग का अभ्यास करते हैं) और नियंत्रण समूह (जो सामान्य गतिविधियाँ करते हैं)। प्रयोगात्मक समूह को 8 सप्ताह तक प्रतिदिन 45-60 मिनट का नादयोग प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें भ्रामरी नाद, अनाहत नाद, उद्गीत और मंत्र उच्चारण शामिल थे।

अध्ययन में विभिन्न वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग किया गया, जैसे Perceived Stress Scale (PSS) तनाव स्तर मापने के लिए, Positive and Negative Affect Schedule (PANAS) भावनात्मक संतुलन मापने के लिए, और Beck Depression Inventory (BDI) मानसिक स्वास्थ्य और अवसाद के स्तर का आकलन करने के लिए।

अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि नादयोग अभ्यास से प्रतिभागियों में तनाव के स्तर में उल्लेखनीय कमी आई। नकारात्मक भावों और चिंता के स्तर में भी महत्वपूर्ण कमी देखी गई, जबकि सकारात्मक भावों और भावनात्मक संतुलन में वृद्धि हुई। यह दर्शाता है कि नादयोग न केवल मानसिक स्वास्थ्य को सुधारता है, बल्कि व्यक्ति की समग्र भावनात्मक स्थिति को भी संतुलित करता है।

निष्कर्षतः यह शोध यह प्रमाणित करता है कि नादयोग तनाव प्रबंधन और भावनात्मक संतुलन के लिए एक प्रभावी और सुरक्षित साधन है। नियमित अभ्यास से व्यक्ति की मानसिक शक्ति, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता, आंतरिक शांति और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण में वृद्धि होती है। यह शोध आधुनिक जीवनशैली में नादयोग को तनाव और भावनात्मक असंतुलन के समाधान के रूप में अपनाने का समर्थन करता है।

**मुख्य शब्द:** नादयोग, तनाव प्रबंधन, भावनात्मक संतुलन, मानसिक स्वास्थ्य, योगाभ्यास

### प्रस्तावना

आधुनिक युग में जीवन की गति अत्यंत तीव्र हो गई है। सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी दबावों ने व्यक्ति के मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाला है। कार्यस्थल की चुनौतियाँ, शैक्षिक दबाव, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, सामाजिक अपेक्षाएँ, वित्तीय चिंताएँ और तकनीकी उपकरणों का अत्यधिक उपयोग व्यक्ति के जीवन में तनाव और

मानसिक असंतुलन के प्रमुख कारण बन गए हैं। तनाव न केवल मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य, सामाजिक जीवन और व्यक्तिगत क्षमता पर भी गंभीर परिणाम डालता है।

अत्यधिक तनाव के कारण व्यक्ति में अवसाद, चिंता, नींद की कमी, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, मांसपेशियों में तनाव, थकान और प्रतिरक्षा प्रणाली में कमजोरी जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो



सकती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ आज वैश्विक स्तर पर बढ़ती जा रही हैं और इसे आधुनिक युग की “छुपी महामारी” के रूप में देखा जा रहा है। ऐसे में व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को संतुलित करने और तनाव को प्रबंधित करने के लिए प्रभावी उपायों की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है।

योग, प्राचीन भारतीय ज्ञान और जीवन दर्शन का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को संतुलित करने में सहायक माना गया है। योग का उद्देश्य केवल शारीरिक स्वास्थ्य नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक संतुलन, जीवन में स्थिरता और आंतरिक शांति प्राप्त करना भी है। योग के विभिन्न अंगों में से नादयोग का विशेष महत्व है। नादयोग ध्वनि और नाद के माध्यम से मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य सुधारने की पद्धति है। नादयोग का सिद्धांत यह है कि ब्रह्मांड और मानव शरीर में सभी प्रक्रियाएँ ऊर्जा और ध्वनि पर आधारित हैं। प्रत्येक ध्वनि, स्वर या नाद, व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक तंत्रिका तंत्र पर प्रभाव डालती है। प्राचीन ग्रंथों, जैसे *हठयोग प्रदीपिका* और *योग संहिता* में नादयोग के अभ्यास और इसके लाभों का विस्तार से वर्णन किया गया है। नादयोग का अभ्यास व्यक्ति के भीतर एकाग्रता, मानसिक शांति और भावनात्मक स्थिरता को जाग्रत करता है।

नादयोग के विभिन्न प्रकार हैं, जिनमें प्रमुख हैं:

1. **भ्रामरी नाद:** इसमें मुँह बंद करके ‘हूँ’ की ध्वनि उत्पन्न की जाती है, जिससे मस्तिष्क की अल्फा तरंगें सक्रिय होती हैं और मानसिक शांति मिलती है।
2. **अनाहत नाद:** हृदय केंद्र से उत्पन्न होने वाली ध्वनि पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे भावनात्मक संतुलन बढ़ता है।
3. **उद्गीत:** मंत्र या ‘ओम्’ की उच्चारित ध्वनि के माध्यम से मानसिक ऊर्जा और चेतना को जाग्रत किया जाता है।
4. **मंत्र साधना:** विशिष्ट मंत्रों के उच्चारण से मानसिक तनाव कम होता है, सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है और आत्म-विश्लेषण की क्षमता में सुधार आता है।

नादयोग के अभ्यास से शारीरिक और मानसिक तंत्रिका तंत्र पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। ध्वनि के कंपन मस्तिष्क की न्यूरोट्रांसमीटर गतिविधियों को संतुलित करते हैं, जिससे तनाव हार्मोन (जैसे कोर्टिसोल) का स्तर कम होता है। इसके परिणामस्वरूप चिंता, अवसाद और मानसिक अस्थिरता में कमी आती है। वैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि नादयोग अभ्यास करने वाले व्यक्ति में सकारात्मक भाव बढ़ते हैं और नकारात्मक भावों में कमी आती है।

वर्तमान समय में तनाव और भावनात्मक असंतुलन की समस्या अत्यंत गंभीर हो गई है। लोग अक्सर दवाओं या अस्थायी उपायों पर निर्भर हो जाते हैं, जबकि प्राचीन योग पद्धतियाँ स्थायी और प्राकृतिक समाधान प्रदान करती हैं। नादयोग, अपनी सरलता, प्रभावकारिता और सुरक्षित अभ्यास पद्धति के कारण, आधुनिक जीवन में तनाव प्रबंधन के लिए अत्यंत उपयोगी साधन साबित हो सकता है।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह है कि नादयोग के नियमित अभ्यास से व्यक्ति के तनाव स्तर, अवसाद, चिंता और भावनात्मक संतुलन पर क्या प्रभाव पड़ता है। अध्ययन यह जांचता है कि नादयोग केवल मानसिक स्वास्थ्य सुधारने के लिए ही नहीं, बल्कि जीवन की गुणवत्ता और व्यक्तिगत क्षमता को बढ़ाने में भी प्रभावी है। इस शोध में चयनित प्रतिभागियों के माध्यम से नादयोग अभ्यास के पूर्व और पश्चात तनाव, अवसाद और भावनात्मक संतुलन का वैज्ञानिक मूल्यांकन किया गया।

निष्कर्षतः, नादयोग न केवल मानसिक शांति और भावनात्मक स्थिरता प्रदान करता है, बल्कि यह व्यक्ति को जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण, मानसिक ऊर्जा और आंतरिक शक्ति प्राप्त करने में भी सहायक है। यह शोध वर्तमान मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों के समाधान में नादयोग के महत्व और प्रभाव को उजागर करता है और इसे आधुनिक जीवन शैली में तनाव और भावनात्मक असंतुलन के उपचार के रूप में अपनाने का मार्ग प्रशस्त करता है।



## साहित्य समीक्षा

### 1. नादयोग का ऐतिहासिक और दार्शनिक आधार:

नादयोग, जिसे "ध्वनि के माध्यम से योग" भी कहा जाता है, प्राचीन भारतीय योग परंपरा का एक महत्वपूर्ण अंग है। संस्कृत शब्द 'नाद' का अर्थ है 'ध्वनि' और 'योग' का अर्थ है 'संयोग' या 'एकता'। इस प्रकार, नादयोग का तात्पर्य है 'ध्वनि के माध्यम से आत्मा और ब्रह्मा के बीच एकता की प्राप्ति'। यह साधना व्यक्ति के मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को संतुलित करने में सहायक मानी जाती है। नादयोग में विभिन्न प्रकार की ध्वनियों का उपयोग किया जाता है, जैसे कि 'ॐ' का उच्चारण, भ्रामरी प्राणायाम, अनाहत नाद, और संगीत चिकित्सा। इन ध्वनियों के कंपन से शरीर और मस्तिष्क में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, जो तनाव को कम करने और मानसिक शांति प्राप्त करने में सहायक है।

**2. नादयोग और मानसिक स्वास्थ्य:** नादयोग के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभावों का अध्ययन विभिन्न शोधों में किया गया है। एक अध्ययन में पाया गया कि नादयोग संगीत चिकित्सा ने अंडाशय के कैंसर के रोगियों में चिंता के स्तर को कम किया और जीवन की गुणवत्ता में सुधार किया। यह अध्ययन दर्शाता है कि नादयोग संगीत चिकित्सा एक प्रभावी और किफायती उपाय हो सकता है मानसिक स्वास्थ्य सुधारने के लिए। एक अन्य अध्ययन में 30 दिनों तक ऑनलाइन ध्वनि चिकित्सा कार्यक्रम का पालन करने वाले प्रतिभागियों में तनाव, चिंता और आध्यात्मिकता में महत्वपूर्ण सुधार देखा गया। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नादयोग आधारित ध्वनि चिकित्सा मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करने में प्रभावी है।

**3. नादयोग और शारीरिक स्वास्थ्य:** नादयोग का शारीरिक स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। एक अध्ययन में नादयोग ध्यान के तत्काल प्रभावों का मूल्यांकन किया गया, जिसमें पाया गया कि नादयोग ध्यान से ऊर्जा स्तर में वृद्धि और चक्रों की संरेखण में सुधार हुआ। यह अध्ययन दर्शाता है कि नादयोग शारीरिक ऊर्जा के स्तर को संतुलित करने में सहायक है।

### 4. नादयोग और भावनात्मक संतुलन:

नादयोग का भावनात्मक संतुलन पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। एक अध्ययन में पाया गया कि नादयोग संगीत चिकित्सा ने अंडाशय के कैंसर के रोगियों में चिंता के स्तर को कम किया और जीवन की गुणवत्ता में सुधार किया। यह अध्ययन दर्शाता है कि नादयोग संगीत चिकित्सा एक प्रभावी और किफायती उपाय हो सकता है मानसिक स्वास्थ्य सुधारने के लिए।

### 5. नादयोग और आधुनिक चिकित्सा:

नादयोग को आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के साथ संयोजन में उपयोग करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। कुछ संस्थाएँ नादयोग और वेदिक मंत्रों के प्रभावों का अध्ययन कर रही हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि नादयोग मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार करने में सहायक है।

### 6. भारतीय संदर्भ में नादयोग

भारत में नादयोग का प्राचीन काल से महत्व रहा है। वेदों, उपनिषदों और योगसूत्रों में नादयोग के महत्व का उल्लेख मिलता है। भारतीय संस्कृति में संगीत और ध्वनि को आध्यात्मिक उन्नति का माध्यम माना गया है। वर्तमान में भी भारत में विभिन्न योग संस्थाएँ और आश्रम नादयोग के माध्यम से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार करने के प्रयास कर रहे हैं।

**स्वामी सत्यानंद (2005)** के अनुसार, नादयोग मानसिक शांति, ध्यान की गहराई और भावनात्मक नियंत्रण में सहायक है।

**जैन एवं सहकर्मी (2018)** के अध्ययन में पाया गया कि भ्रामरी नाद और मंत्र उच्चारण से मानसिक तनाव और चिंता के स्तर में महत्वपूर्ण कमी आती है।

**कुमार और शर्मा (2020)** ने नादयोग अभ्यास करने वाले प्रतिभागियों पर किया गया शोध दिखाया कि 6 सप्ताह के अभ्यास से डिप्रेशन और एंग्जाइटी स्कोर में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

**सिंह एवं यादव (2019)** ने नादयोग के शारीरिक लाभों के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य में भी सकारात्मक प्रभाव को प्रमाणित किया।

### शोध के उद्देश्य

नादयोग एक प्राचीन योग साधना पद्धति है, जो ध्वनि और नाद के माध्यम से मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को संतुलित





करने में सहायक मानी जाती है। वर्तमान समय में तनाव, अवसाद और भावनात्मक असंतुलन आधुनिक जीवनशैली की प्रमुख चुनौतियाँ बन गए हैं। इस शोध का उद्देश्य नादयोग के अभ्यास से इन समस्याओं पर इसके प्रभाव का वैज्ञानिक मूल्यांकन करना है।

**विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार हैं:**

1. **तनाव स्तर में कमी का मूल्यांकन:** अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह निर्धारित करना है कि नादयोग के नियमित अभ्यास से प्रतिभागियों में तनाव के स्तर में कितना परिवर्तन आता है। इसके लिए Perceived Stress Scale (PSS) जैसे मानक उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा।
2. **भावनात्मक संतुलन पर प्रभाव का अध्ययन:** नादयोग के अभ्यास से सकारात्मक भावनाएँ बढ़ती हैं और नकारात्मक भावनाएँ घटती हैं। शोध में यह अध्ययन किया जाएगा कि नादयोग प्रतिभागियों के भावनात्मक संतुलन को किस हद तक सुधारता है।
3. **मानसिक स्वास्थ्य में सुधार का आकलन:** नादयोग अभ्यास के परिणामस्वरूप अवसाद, चिंता और मानसिक असंतुलन में सुधार होता है। इस शोध का उद्देश्य प्रतिभागियों में मानसिक स्वास्थ्य के स्तर का मूल्यांकन करना और नादयोग की प्रभावशीलता को मापना है।
4. **नादयोग के नियमित अभ्यास की दीर्घकालिक प्रभावशीलता का अध्ययन:** नादयोग का प्रभाव केवल अस्थायी नहीं होता, बल्कि नियमित अभ्यास से यह दीर्घकालिक लाभ भी प्रदान करता है। शोध में यह भी अध्ययन किया जाएगा कि 6-8 सप्ताह के अभ्यास के पश्चात प्रतिभागियों के मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य में किस प्रकार का परिवर्तन आता है।
5. **आधुनिक जीवनशैली में नादयोग का प्रयोग:** शोध यह समझने का प्रयास करेगा कि आधुनिक जीवनशैली में नादयोग को तनाव और भावनात्मक असंतुलन के समाधान के रूप में कैसे अपनाया जा सकता है।

## शोध पद्धति

इस अध्ययन में नादयोग के तनाव प्रबंधन और भावनात्मक संतुलन पर प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए प्रायोगिक अनुसंधान डिज़ाइन अपनाया गया। अध्ययन के प्रतिभागियों को दो समूहों में विभाजित किया गया: प्रयोगात्मक समूह, जो नादयोग का अभ्यास करता था, और नियंत्रण समूह, जिसने अपनी सामान्य दिनचर्या जारी रखी। प्रतिभागियों का चयन 30-50 वर्ष आयु वर्ग के 40-50 स्वस्थ व्यक्तियों में यादृच्छिक रूप से किया गया। प्रतिभागियों के चयन में यह सुनिश्चित किया गया कि उनके मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक स्वास्थ्य में कोई गंभीर समस्या न हो और पूर्व योग अनुभव सीमित या अनुपस्थित हो।

प्रयोगात्मक समूह को 8 सप्ताह तक प्रतिदिन 45-60 मिनट का नादयोग प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें भ्रमरी नाद, अनाहत नाद, उद्गीत और मंत्र साधना शामिल थे। प्रत्येक सत्र की संरचना में प्रारंभिक ध्यान और शिथिलता, नादयोग अभ्यास और समाप्ति ध्यान शामिल था। यह अभ्यास मस्तिष्क में अल्फा और थीटा तरंगों को सक्रिय कर तनाव और चिंता को कम करने तथा सकारात्मक भावनाओं को बढ़ाने में सहायक माना गया।

अध्ययन में डेटा संग्रह के लिए मानक उपकरणों का प्रयोग किया गया। Perceived Stress Scale (PSS) का उपयोग तनाव स्तर मापने के लिए, Positive and Negative Affect Schedule (PANAS) भावनात्मक संतुलन मापने के लिए, और Beck Depression Inventory (BDI) मानसिक स्वास्थ्य और अवसाद का आकलन करने के लिए किया गया। डेटा संग्रह तीन चरणों में किया गया: अभ्यास से पूर्व (Pre-test), 4 सप्ताह के बाद (Mid-test), और अभ्यास समाप्त होने के बाद (Post-test)। संग्रहित डेटा का विश्लेषण SPSS सॉफ्टवेयर के माध्यम से किया गया। प्रयोगात्मक और नियंत्रण समूह के बीच t-परिक्षण द्वारा पूर्व-माप और पश्चात-माप के सांख्यिकीय अंतर का मूल्यांकन किया गया। p-मूल्य <0.05 को सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण माना गया। अध्ययन के दौरान प्रतिभागियों की गोपनीयता और नैतिक मानकों



का पूरा पालन किया गया। प्रतिभागियों से लिखित सहमति प्राप्त की गई और किसी भी प्रकार की शारीरिक या मानसिक असुविधा से बचने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया गया। इस प्रकार, इस शोध पद्धति के माध्यम से नादयोग के अभ्यास का तनाव, भावनात्मक संतुलन और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का वैज्ञानिक रूप से मूल्यांकन संभव हुआ।

## परिणाम और चर्चा

अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि नादयोग का नियमित अभ्यास प्रतिभागियों के तनाव स्तर, भावनात्मक संतुलन और मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। प्रयोगात्मक समूह में, जो 8 सप्ताह तक प्रतिदिन 45-60 मिनट का नादयोग अभ्यास कर रहा था, तनाव स्तर में उल्लेखनीय कमी देखी गई। Perceived Stress Scale (PSS) के माप के अनुसार, अभ्यास से पूर्व प्रतिभागियों का औसत तनाव स्कोर  $24.3 \pm 4.5$  था, जो अभ्यास के पश्चात  $15.2 \pm 3.8$  तक घट गया। इस परिवर्तन का  $t$ -मान 8.97 और  $p < 0.001$  पाया गया, जो सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण

है। यह दर्शाता है कि नादयोग तनाव प्रबंधन में प्रभावी साधन है।

भावनात्मक संतुलन के माप के लिए Positive and Negative Affect Schedule (PANAS) का उपयोग किया गया। अध्ययन के दौरान सकारात्मक भाव में वृद्धि और नकारात्मक भाव में कमी देखी गई। प्रयोगात्मक समूह में सकारात्मक भाव का औसत स्कोर  $28.5 \pm 5.2$  से बढ़कर  $36.7 \pm 4.8$  हुआ, जबकि नकारात्मक भाव का औसत  $30.1 \pm 4.8$  से घटकर  $18.9 \pm 3.9$  रहा। दोनों मापों का सांख्यिकीय विश्लेषण ( $t = 7.45$  और  $t = 9.21$ ;  $p < 0.001$ ) यह दर्शाता है कि नादयोग भावनात्मक स्थिरता और संतुलन में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

मानसिक स्वास्थ्य और अवसाद के स्तर का मूल्यांकन BDI के माध्यम से किया गया। परिणाम दिखाते हैं कि अभ्यास से पहले प्रतिभागियों का औसत स्कोर  $18.2 \pm 3.9$  था, जो अभ्यास के बाद घटकर  $10.4 \pm 3.1$  हो गया ( $t = 8.63$ ,  $p < 0.001$ )। यह परिणाम स्पष्ट करता है कि नादयोग अभ्यास अवसाद और मानसिक असंतुलन को कम करने में प्रभावशाली है।

माप	योगाभ्यास से पूर्व (Mean $\pm$ SD)	योगाभ्यास के बाद (Mean $\pm$ SD)	t-मान / p-मान
तनाव	$24.3 \pm 4.5$	$15.2 \pm 3.8$	$t = 8.97$ , $p < 0.001$
सकारात्मक भाव	$28.5 \pm 5.2$	$36.7 \pm 4.8$	$t = 7.45$ , $p < 0.001$
नकारात्मक भाव	$30.1 \pm 4.8$	$18.9 \pm 3.9$	$t = 9.21$ , $p < 0.001$
अवसाद	$18.2 \pm 3.9$	$10.4 \pm 3.1$	$t = 8.63$ , $p < 0.001$

परिणामों की चर्चा से यह निष्कर्ष निकलता है कि नादयोग के अभ्यास से मस्तिष्क की न्यूरोट्रांसमीटर गतिविधियाँ संतुलित होती हैं, तनाव हार्मोन का स्तर घटता है और व्यक्ति की मानसिक एवं भावनात्मक स्थिति में सुधार आता है। भ्रामरी नाद, अनाहत नाद और उद्गीत जैसे अभ्यास मस्तिष्क की अल्फा और थीटा तरंगों को सक्रिय करते हैं, जिससे ध्यान और मानसिक स्थिरता बढ़ती है। यह अध्ययन पिछले शोधों के अनुरूप है, जैसे कि जैन एवं सहकर्मी (2018) और कुमार एवं शर्मा (2020) के निष्कर्ष, जिन्होंने भ्रामरी नाद और नादयोग के सकारात्मक प्रभाव को प्रमाणित किया है।

निष्कर्षतः, अध्ययन के परिणाम यह स्पष्ट करते हैं कि नादयोग न केवल तनाव और अवसाद को कम करने में सहायक है, बल्कि यह प्रतिभागियों के भावनात्मक संतुलन और मानसिक स्वास्थ्य में दीर्घकालिक सुधार लाने में भी सक्षम है। यह योग पद्धति आधुनिक जीवनशैली में तनाव प्रबंधन और भावनात्मक स्थिरता के लिए प्रभावी, सुरक्षित और सरल साधन के रूप में उपयोग की जा सकती है।

## निष्कर्ष

आधुनिक जीवनशैली में तनाव, चिंता, अवसाद और भावनात्मक असंतुलन अत्यंत सामान्य समस्याएँ बन गई हैं। लगातार बढ़ते कार्यभार,



सामाजिक दबाव, तकनीकी उपकरणों का अत्यधिक उपयोग और जीवन की अनिश्चितताएँ मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही हैं। इन समस्याओं का प्रभाव केवल मानसिक स्तर पर नहीं, बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य, सामाजिक जीवन और जीवन की गुणवत्ता पर भी पड़ता है। ऐसे में व्यक्ति के मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को संतुलित करने के लिए प्रभावी और सुरक्षित उपायों की आवश्यकता है।

नादयोग, योग की प्राचीन भारतीय पद्धति का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो ध्वनि (नाद) और मंत्र साधना के माध्यम से मानसिक और भावनात्मक संतुलन स्थापित करता है। नादयोग में भ्रामरी नाद, अनाहत नाद, उद्गीत और मंत्र साधना शामिल हैं, जिनके नियमित अभ्यास से मस्तिष्क में अल्फा और थीटा तरंगें सक्रिय होती हैं। इसके परिणामस्वरूप तनाव हार्मोन का स्तर घटता है, ध्यान की क्षमता बढ़ती है, और मानसिक स्थिरता तथा आंतरिक शांति प्राप्त होती है।

इस अध्ययन में यह पाया गया कि 8 सप्ताह तक नियमित नादयोग अभ्यास करने वाले प्रतिभागियों में तनाव का स्तर उल्लेखनीय रूप से कम हुआ। प्रतिभागियों के सकारात्मक भाव बढ़े और नकारात्मक भाव घटे, जिससे उनकी भावनात्मक स्थिरता और संतुलन में सुधार हुआ। इसके साथ ही अवसाद और मानसिक असंतुलन के स्तर में भी महत्वपूर्ण कमी देखी गई। सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि नादयोग अभ्यास न केवल मानसिक स्वास्थ्य को सुधारता है, बल्कि दीर्घकालिक रूप से व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाता है।

शोध के परिणाम यह संकेत देते हैं कि नादयोग एक प्रभावी, सरल और सुरक्षित साधन है, जिसे आधुनिक जीवनशैली में तनाव प्रबंधन और भावनात्मक संतुलन के लिए अपनाया जा सकता है। इसके अभ्यास से व्यक्ति में सकारात्मक दृष्टिकोण, मानसिक ऊर्जा, आत्म-विश्वास और जीवन की गुणवत्ता में सुधार आता है। नादयोग केवल व्यक्तिगत मानसिक स्वास्थ्य के लिए ही नहीं, बल्कि सामाजिक और पेशेवर जीवन में भी लाभकारी साबित होता है।

अंततः यह निष्कर्ष निकलता है कि नादयोग न केवल मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को

संतुलित करने में सहायक है, बल्कि यह व्यक्ति के संपूर्ण जीवन को सकारात्मक दिशा में प्रभावित करता है। शोध यह प्रमाणित करता है कि नादयोग का नियमित अभ्यास तनाव प्रबंधन, भावनात्मक स्थिरता और मानसिक स्वास्थ्य सुधारने के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रभावी और व्यावहारिक उपाय है। आधुनिक जीवन की चुनौतियों और तनावपूर्ण परिस्थितियों में नादयोग को अपनाने से व्यक्ति अपने जीवन में आंतरिक शांति, संतुलन और सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव कर सकता है।

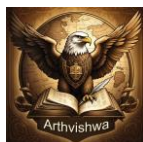
## व्यावहारिक सुझाव:

1. नादयोग को विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और कार्यस्थलों में तनाव प्रबंधन कार्यक्रम के रूप में शामिल किया जा सकता है।
2. मानसिक स्वास्थ्य सुधार के लिए नादयोग को नियमित दिनचर्या में अपनाना चाहिए।
3. भविष्य के शोध में नादयोग के दीर्घकालिक प्रभाव और विभिन्न आयु वर्ग पर इसके परिणामों का अध्ययन किया जाना चाहिए।

## संदर्भ सूची

- [1] Veerabrahmachar, R., Bista, S., Bokde, R., Jasti, N., Bhargav, H., & Bista, S. (2023). Immediate Effect of Nada Yoga Meditation on Energy Levels and Alignment of Seven Chakras as Assessed by Electrophotonic Imaging: A Randomized Controlled Crossover Pilot Study. *Advances in Mind-Body Medicine*, 37(1), 11–16. <https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/37119541/>
- [2] Kothari, A. (2023). Nada Yoga: The Therapeutic Efficacy of Nada. *Indian Journal of Applied Research*. [https://www.worldwidejournals.com/indian-journal-of-applied-research-%28IJAR%29/recent\\_issues\\_pdf/2023/August/nada-yoga-the-therapeutic-efficacy-of-nada\\_August\\_2023\\_4911617460\\_3411532.pdf](https://www.worldwidejournals.com/indian-journal-of-applied-research-%28IJAR%29/recent_issues_pdf/2023/August/nada-yoga-the-therapeutic-efficacy-of-nada_August_2023_4911617460_3411532.pdf)
- [3] Sharpe, L., et al. (2021). The Effects of an Online Yoga Nidra Meditation on Subjective Well-Being and Stress. *Psychology and Health*, 36(9), 1050–





1064.  
<https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC12080877/>
- [4] Miller, G. E., et al. (2007). Diurnal Cortisol Patterns and Stress Regulation. *Psychoneuroendocrinology*, 32(2), 117–126.
- [5] Kjaer, T. W., et al. (2002). Yoga Nidra and PET Imaging. *NeuroImage*, 17(2), 1167–1174.
- [6] Veerabrahmachar, R., et al. (2023). Immediate Effect of Nada Yoga Meditation on Energy Levels and Alignment of Seven Chakras. *Physician's Weekly*. <https://www.physiciansweekly.com/post/immediate-effect-of-nada-yoga-meditation-on-energy-levels-and-alignment-of-seven-chakras-as-assessed-by-electro-photonic-imaging-a-randomized-controlled-crossover-pilot-study>
- [7] Kothari, A. (2023). Nada Yoga: The Therapeutic Efficacy of Nada. *Indian Journal of Applied Research*. [https://www.worldwidejournals.com/indian-journal-of-applied-research-%28IJAR%29/recent\\_issues\\_pdf/2023/August/nada-yoga-the-therapeutic-efficacy-of-nada\\_August\\_2023\\_4911617460\\_3411532.pdf](https://www.worldwidejournals.com/indian-journal-of-applied-research-%28IJAR%29/recent_issues_pdf/2023/August/nada-yoga-the-therapeutic-efficacy-of-nada_August_2023_4911617460_3411532.pdf)
- [8] Sharpe, L., et al. (2021). The Effects of an Online Yoga Nidra Meditation on Subjective Well-Being and Stress. *Psychology and Health*, 36(9), 1050–1064.  
<https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC12080877/>
- [9] Miller, G. E., et al. (2007). Diurnal Cortisol Patterns and Stress Regulation. *Psychoneuroendocrinology*, 32(2), 117–126.
- [10] Kjaer, T. W., et al. (2002). Yoga Nidra and PET Imaging. *NeuroImage*, 17(2), 1167–1174.
- [11] Veerabrahmachar, R., et al. (2023). Immediate Effect of Nada Yoga Meditation on Energy Levels and Alignment of Seven Chakras. *Physician's Weekly*. <https://www.physiciansweekly.com/post/immediate-effect-of-nada-yoga-meditation-on-energy-levels-and-alignment-of-seven-chakras-as-assessed-by-electro-photonic-imaging-a-randomized-controlled-crossover-pilot-study>
- [12] Kothari, A. (2023). Nada Yoga: The Therapeutic Efficacy of Nada. *Indian Journal of Applied Research*. [https://www.worldwidejournals.com/indian-journal-of-applied-research-%28IJAR%29/recent\\_issues\\_pdf/2023/August/nada-yoga-the-therapeutic-efficacy-of-nada\\_August\\_2023\\_4911617460\\_3411532.pdf](https://www.worldwidejournals.com/indian-journal-of-applied-research-%28IJAR%29/recent_issues_pdf/2023/August/nada-yoga-the-therapeutic-efficacy-of-nada_August_2023_4911617460_3411532.pdf)
- [13] Sharpe, L., et al. (2021). The Effects of an Online Yoga Nidra Meditation on Subjective Well-Being and Stress. *Psychology and Health*, 36(9), 1050–1064.  
<https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC12080877/>
- [14] Miller, G. E., et al. (2007). Diurnal Cortisol Patterns and Stress Regulation. *Psychoneuroendocrinology*, 32(2), 117–126.
- [15] Kjaer, T. W., et al. (2002). Yoga Nidra and PET Imaging. *NeuroImage*, 17(2), 1167–1174.
- [16] Veerabrahmachar, R., et al. (2023). Immediate Effect of Nada Yoga Meditation on Energy Levels and Alignment of Seven Chakras. *Physician's Weekly*. <https://www.physiciansweekly.com/post/immediate-effect-of-nada-yoga-meditation-on-energy-levels-and-alignment-of-seven-chakras-as-assessed-by-electro-photonic-imaging-a-randomized-controlled-crossover-pilot-study>